समाचार एवं विचार सेवा
वार्षिक सहयोग राशि 25/–
महाकौशल–संदेश
वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 29 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा
RNI No. MPHIN/2001/11140
यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

विजया दशमी पर श्री भागवत जी का ओजस्वी उद्‌बोधन

विश्व के आर्थिक भूचालों का असर भारत पर सबसे कम

गत 70 वर्षों में पहली बार विश्व का ध्यान भारत की तरफ गया है। सीमा पर हमारी सेनायें मुँहतोड़ जवाब दे रही हैं। डोकलाम विवाद में भी हमने भारतीय गौरव को झुकने नही दिया। विगत इतिहास से हम अवगत हैं। हमारे यहॉ विदेशी आये और हमने राष्ट्र को खो दिया। लेकिन राष्ट्र की विचारधारा सतत् चलती रही। जब किसी देश में सारी बातें जैसे सुरक्षा, अर्थ व्यवस्था आदि में संस्कृति झलकती है तो दुनिया में उस देश को मान्यता मिलती है। अब गौरव – अभिमान का भाव जगाने की अनुभूति होने लगी है। उक्त उद्‌गार विश्व के सबसे बड़े सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक श्री मोहनरावं जी भागवत नें विजया–दशमी पर्व पर नागपुर रेशिम बाग स्थित संघ मुख्यालय के प्रांगण में आयोजित अपने उदबोधन में व्यक्त किये। इसके पूर्व संघ के स्वयंसेवकों की एक बड़ी रैली आयोजित की गयी थी। इस वृहद कार्यक्रम में स्वयंसेवकों के अलावा भारी संख्या में उपस्थित श्रोता एवं आमंत्रित अतिथि उपस्थित थे। संघ प्रमुख का उदबोधन वर्ष के आगामी कार्यक्रमों एवं संघ की नीतियों का परचम होता है, इसलिये राष्ट्रहित चिन्तकों की इस दृष्टि से बड़ी उत्सुकता बनी रहती है। इस अवसर पर आपने कहा कि शासन स्तर पर जो बदलाव दिख रहे हैं, देश की जो अच्छी तस्वीर बन रही है, उसे और सुन्दर एवं स्थायी बनाने के लिये समाज की सज्जन शक्ति का जागृत होना आवश्यक ही है। आपने मोदी सरकार के काम और योजनाओं की भी प्रशंसा की। आपने इस बात का भी उल्लेख किया कि जम्मू और लद्दाख के साथ पहले सौतेला व्यवहार किया गया। तीन महीने पहिले कश्मीर में स्थितियॉ अनिश्चित थी, लेकिन जिस तरह से अलगाव वादियों से निपटा गया है, पुलिस और सेना को पूरा कन्ट्रोल दिया गया है, वह प्रशंसनीय है। सीमाओं पर चुनौती देने वालों को हमने जबाव दिया है, अंतराष्ट्रीय मंचों पर भी उन्हे जवाब मिला है। कश्मीर में देश विरोधी ताकतों की कमर टूट गयी है। कश्मीरी पंडित नागरिक अधिकारों से वंचित हैं। अलगाववादियों पर सख्ती जारी रखते हुये वहॉ के नागरिकों को आत्मीयता का अनुभव कराया जाना चाहिये। केरल और बंगाल की धटनाओं का उल्लेख करते हुये आपने कहा कि कम्युनिष्ट विचार धारा का आधार ही वर्ग सघर्ष है इसलिये उनका यही प्रयास रहा है कि कैसे समाज में असन्तोष उत्पन्न किया जाय। इन राष्ट्रविरोधी ताकतों के षड़यंत्र को असफल करने के लिये सभी राष्ट्रहित साधकों को एक साथ खड़े होने की जरूरत है। वहॉ जिहादी और राष्ट्रविरोधी ताकतें अपना खेल खेल रही है। रोहिंग्या समस्या पर अपने विचार व्यक्त करते हुये आपने कहा कि मानवता की बात तो ठीक है लेकिन वह आत्मघाती सिद्ध न हो इसका ख्याल रखना होगा। इन्हें यदि आश्रय दिया गया तो रोजगार पर भार और सुरक्षा पर संकट खड़ा होगा क्यों कि रोहिंग्याओं के जेहादियों से लिंक है, जो भारत के लिये खतरा है। आपने आगे कहा कि गोरक्षा के नाम पर हुयी हिंसा में संध विरोधियों ने पड़यंत्र पूर्वक राष्ट्रीय विचार

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

धारा 370 A : देशहित में नही

—डॉ. किशन कछवाहा

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक श्री मोहनराव भागवत ने गत दिवस नागपुर में अपने विजयादशमी के उद्‌बोधन में कहा था कि जम्मू – कश्मीर के लोग शेष भारत के लोगों के साथ घुलमिल सकें, इसके लिये संवैधानिक प्रावधान करने होंगे। संदर्भ यह था कि राज्य के ही स्थायी निवासी पाकिस्तान के अनधिकृत कब्जे वाले जम्मू – कश्मीर वाले हिस्से से सन् 1947 में आये व कश्मीर धाटी से सन् 1990 में विस्थापित बंधुओं की समस्याओं पर ध्यान दिया जा सके। ताकि वे भी भारत के अन्य नागरिकों की तरह प्रजातांत्रिक अधिकारों का उपयोग करते हुये सुख–सम्मान व सुरक्षा के साथ रह सकें। इस बयान में ऐसा क्या भागवत जी ने कह दिया जिसके कारण कॉग्रेस, नेशनल कॉफ्रेंस और कम्युनिष्ट पार्टी सहित सेकुलर नेताओं के पेट में ऐंठन शुरू हो गयी। इनके द्वारा कहा जाने लगा कि राज्य के विशेष दर्जे में कोई भी छेड़छाड़ खतरनाक होगी। आजादी के बाद जम्मू–कश्मीर के ढ़ॉचे में जो फेर बदल किया गया था– क्या वह कम खतरनाक था ? जिसका परिणाम आज 70 साल बाद तक संपूर्ण भारत भुगत रहा है। कश्मीर के वर्तमान हालात के लिये कॉग्रेस पार्टी द्वारा अतीत में की गयी गल्लितॉ है जो नासूर बन चुकी हैं। कम से कम अब इतना बदलाव तो आया है कि आतंकियों को खिराज –ए–अकीदत (श्रद्धार्पण) के लिये भीड़ बढ़ाने वाले अब हतोत्साहित हो रहे हैं। औचित्य हीन हो चुकी धारा 370 के पक्ष में दलीलें देकर उछाल मार रहे नेता चाहते क्या हैं ? क्या वे चाहते हैं कि घाटी में मानव अधिकारों का हनन, महिलाओं के साथ भेदभाव होता रहे। अनुच्छेद 35 ए तो लैंगिक भेदभाव पूर्ण है। और तो और यह अनुच्छेद आधार भूत ढ़ॉचे का ही उल्लॅधन करता है। कश्मीर को अन्य प्रान्तों की तुलना में अधिकाधिक आर्थिक मदद दिये जाने के बावजूद अलगाववादी कश्मीरी नेता और अधिक स्वायत्तता का राग अलाप कर जहॉ एक तरफ धाटी के लोगों को बरगलाते रहे हैं। वही दूसरी तरफ विदेशी धन –दुश्मन देश के पैसों से अपना घर भरते रहे हैं और अपने परिवार के बच्चों को विदेशों में शिक्षा के लिये भेजते रहें है। उन्होने कश्मीरी बच्चों की शिक्षा की ओर ध्यान देना उचित नही समझा। जहॉ तक धारा 370 का सवाल है, यह धारा भारत की राष्ट्रीय एवं संवैधानिक मान्यताओं के ही खिलाफ है। जम्मू–कश्मीर में अशान्ति की जन्मदात्री है ये दोनों धारायें मात्र 35 A के कारण जम्मृ–कश्मीर की असंख्य माता–वहिनों को सदियों से घोर अन्याय झेलना पड़ रहा है। यह अनुच्छेद राज्य के बाहर के किसी व्यक्ति से विवाह कर लेने वाली महिला को उसके सम्पत्ति के अधिकार से वंचित करता है। इतना ही नही यह प्रावधान उसके उत्तराधिकारियों पर भी लागू होता है। यह बात समझ के बाहर है कि कॉग्रेस, कम्युनिष्ट और सेकुलर सहित नेशनल कॉफेस के नेता इस घोर अन्यायकारी घारा को अपनी छाती से क्यों चिपकाकर रखना चाहते हैं ? गत दिनों जम्मू–कश्मीर के अनन्तनाग में घुसपैठ कर आगये रोहिंग्या मुस्लिमों के समर्थन में तथा म्यॉमार में उनके विरूद्ध चल रही कार्यवाही के विरोध में किया प्रदर्शन–यह समझने के लिये पर्याप्त है कि पथराव और प्रदर्शन करने वाले देश के हितैषी नही हैं ? वे रोहिंग्याओं के समर्थन में तो है लेकिन कश्मीरी पांडितों की वापिसी के पक्ष में नही हैं जबकि बार बार भारत की सुरक्षा एजेन्सियों ने इस बात की आशंकायें जतायी है कि इनके आतंकवादी समूहों से लिंक है। जम्मू–कश्मीर देश का एक ऐसा प्रान्त है जहॉ पहले से घुसपैठ कर आ गये रोहिंग्याओं को स्थानीय मदद से वैध नागरिक बना लिये जाने का सिलसिला जारी है, यही कारण है। स्थानीय लोगों की सहानुभूति जुड़गयी है और अलगाववादी तत्व निहित स्वार्थों वश इनके समर्थन में उतर आये है। यहॉ इस ओर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है कि मौजूदा हालातों में विस्थापित कश्मीरी पंडित कश्मीर में वापिस नही लौट पा रहे, वही रोहिंग्या घुसपैठिये स्थानीय लोगों की मदद से आश्रय पाने सफल हो रहे है। किन–किन तथ्यों को नजर अन्दाज किया जाय, किन–किन की याद की जाय । सारा देश इस तथ्य से भली भॉति अवगत है कि सेना के प्रयासों से ही आज कश्मीर का अस्तित्व बचा रह सका है। सेना न केवल आतंकी घुसपैठियों से कश्मीरियों की रक्षा करती है, वरन बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के दौरान जी –जान से मदद के लिये खड़ी रहती है। देश के सभी राज्यों में सैनिक कालोनियॉ बनी हैं लेकिन पिछले समय कश्मीर में सैनिक कालोनी बनाने का जिन तौर – तरीकों से विरोघ किया गया, वह एक प्रश्न वाचक चिंह खड़ा करता है। संपूर्ण घाटी में एक उबाल सा आ गया था, जिसे विरोधी कृत्य ही माना जाना उचित होगा। राज्य के विशेष दर्जे को बहाली की जोरदार बकालत करने वाले नेताओं की वजह से जम्मू संभाग में अचानक मास्जिदों और मदरसों की संख्या में वृद्धि, अवैध रोहिंग्याओं, अवैध वॉग्लादेशी नागरिकों के लिये बर्फीला रेगिस्तान लद्दाख भी सुरक्षित स्थल बन जाना भी चिन्ता को बढ़ाने वाला सिद्ध हो रहे है। अपने संवोधन में भागवत जी का यह कथन कि लद्दाख, जम्मू सहित संपूर्ण जम्मू–कश्मीर राज्य में भेदभाव रहित पारदर्शी,स्वच्छ प्रशासन के द्वारा राज्य की जनता तक विकास के लाभ पहुॅचाने का कार्य त्वरित व अधिक गति से हो, इसकी अभी आवश्यकता है। इन शब्दो और भावों के कारण विपक्ष के कतिपय नेताओं के पेट की मरोड़ को विशेषज्ञ राजनैतिज्ञ ही समझकर उचित इलाज कर सकते हैं। संघ सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन है, सांस्कृतिक सौहार्द का पक्षघर है जो अनेकता में एकता के सूत्र में पिरोता है। यही भारत की ताकत है। जम्मू–कश्मीर के पूर्व राज्यपाल श्री जगमोहन का कहना है कि अनुच्छेद 35 ए के चलते लोगों को वे लोग गुमराह कर रहे हैं जो लिबर्टी की मॉग तो करते है लेकिन वे इस लिवर्टी को स्थानीय लोगों को नही देना चाहते इस दिशा में लोगों को जागरूक किये जाने के लिये एक व्यापक मुहीम चलाये जाने की जरूरत है। इस 35 ए के कारण जम्मू–कश्मीर के एक विशेष तबके को लाभ मिला है जबकि एक बड़ी आवादी का हिस्सा अपने मौलिक अधिकारों से वंचित है। राज्य में इस धारा के रहते लाखों परिवार स्थायी निवास प्रमाण पत्र न मिलने के कारण – प्रभावित हुये। उनकी जिन्दगी तबाह हुयी है।

आइपीओ से जुटाए 27,000 करोड़

भारतीय कंपनियों ने चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में आरंभिक सार्वजानिक निर्गम (आइपीओ) से 27,000 करोड़ रूपए जुटाए हैं। इसके अलावा आने वाले महीनों में और भी कई आएपीओं आने है। फाइनांस डॉट कॉम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दिनेश रोहिरा ने कहा कि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी, रिलायंस निप्पॉन लाइफ एसेट मैनेजमेंट और एचडीएफसी स्टैंडर्ड लाइफ इंश्योरेंस कंपनी समेत दर्जन भर से ज्यादा कंपनियों के आइपीओं आने वाले हैं।

गरीबों की पहुंच से दूर

हमारी विधिक प्रणाली इतनी जटिल और खर्चीली है कि गरीब लोगों की न्याय तक पहुंच ही नहीं है। जबकि रईस लोग गिरफ्तारी से पहले जमानत के लिए अदालत पहुंच सकते हैं। वकीलों की सेवाए बहुत महंगी हैं और वे टैक्सी की तरह प्रति घंटा, प्रतिदिन के हिसाब से फीस लेते हैं।

न्यायमूर्ति डॉ. बलवीर सिंह चौहान

• भारत के जिन हिस्सों में मुस्लिम बहुसंख्यक हैं, वहां हिंदुओं का जीवन नरक बन गया है। करीब 25 वर्ष पूर्व मेवात क्षेत्र के हिंदू अपने घर छोड़कर गुरूग्राम में बस गए थे। वे बताते थे कि मुस्लिम युवक उनकी दुकानों से सामान ले जातू और पैसा मांगने पर धमकाते थे। मुझे कभी–कभी मेवात क्षेत्र में जाना पड़ता ाि। इस इलाके में बस से यात्रा के दौरान मैनें भी महसूस किया जैसे मैं भारत नहीं, पाकिस्तान में सफर कर रही हूं। चालाकों–परिचालकों द्वारा महिलाओं पर फब्तिया। कसना आम बात थी। यदि आजादी के बाद उचित कदम उठाए जाते तो बहुसंख्यक हिंदुओ को पग–पग पर प्रताड़ित नही होना पड़ता।

डॉ. लज्जा देवी मोहन, अम्बाला (हरियाणा)

ताजमहल व आसपास के क्षेत्र की विकास योजना का प्रस्ताव

156 करोड़ रूपए की परियोजनाएं प्रस्तावित

उत्तर प्रदेश सरकार ने विश्व बैंक के सहयोग से संचालित प्रो–पुअर टुरिज्म योजना के तहत 370 करोड़ रूपए की परियोजनाए प्रस्तावित की हैं। ताजमहल अथवा आसपास के क्षेत्र के विकास से जुड़े लगभग 156 करोड़ रूपए के कार्य भी सम्मिलित हैं। एक सवाल के जबाव में प्रवक्ता ने बताया कि प्रो–पुअर टुरिज्म योजना के अन्तर्गत ये समस्त प्रस्ताव विश्व बैंक से विचार–विमर्श के बाद तैयार किए गए हैं। उन्होंने बताया कि इन प्रस्तावों को स्वीकृति हेतु भारत सरकार को प्रेषित कर दिया गया है। इस योजना की अगले तीन महीनों में स्वीकृति अपेक्षित है। उनमें आगरा के कछपुरा तथा व मेहताब बाग क्षेत्र के पुनरूद्धार की 22 करोड़ 91 लाख रूपए की परियोजना तथा कछपुरा में तीन करोड़ रूपए की धनराशि से निर्मित कराया जाने वाला सीवेज ट्रीटमेण्ट प्लाण्ट भी शामिल है। उन्होंने बताया कि ताजमहल व आगरा के किले के बीच शाहजहां पार्क और वाक–वे के पुररूद्धार के लिए 22 करोड़ 66 लाख रूपए की परियोजना भी सम्मिलित की गई है। ताजमहल के पश्चिमी द्वार पर 107 करोड़ 49 लाख रूपए की धनराशि से आगंतुक केंन्द्र का निर्माण व पार्किंग व्यवस्था का पुनर्सुधार कराया जाएगा।

खुले में शौच की समस्या से पांच और राज्य मुक्त घोषित

जम्मू–कश्मीर भी होगा शौच से मुक्त

मध्य प्रदेश, छतीसगढ़ हरियाणा, महाराष्ट्र और झारखंड के शहरी इलाकों को खुले में शौच की समस्या से मुक्त घोषित किया गया हे। स्वच्छ भारत अभियान के सोमवार को तीन साल पूरे होने पर आवास व शहरी विकास मंत्री हरदीप सिंह पूरी ने इन पांच राज्यों के सभी शहरों और कस्बों को खुले में शौच की समस्या से मुक्त घोषित किया था। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में पुरी ने अन्य राज्यों से भी इस लक्ष्य को हासिल करने का आहवान करते हुए कहा कि जीवन शैली में बदलाव कर देश को गंदगी से मुक्त किया जा सकता है। देश के शहरी इलाकों में स्वच्छता के मोर्चे पर हासिल की गई अहम उपलब्धियों का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत अब तक 1472 शहरों के 4041 कस्बों को खुले में शौच की समस्या से मुक्त बना दिया गया है। पुरी ने कहा कि स्वच्छता अभ्यिान के तहत शहरी इलाकों के 66 लाख शौचालय बन गए है और 14 लाख शौचालयों का निर्माण कार्य जारी है। इसके अलावा देश भर में पांच लाख सार्वजनिक और सामुदायिक शौचालय निर्मित करने की दिशा में आगे बढ़ते हुए दो लाख शौचालय निर्मित हो चुके है। उन्होंने कहा कि गंदगी की समस्या से निपटने के लिए ठोस कचरा प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इससे शहरी क्षेत्रों में नगर निकायों के एकत्रित कचरें से 50 लाख टन खाद और 500 मेगावाट बिजली बनाने का लक्ष्य तय किया गया है। उन्होनें एक पखवाड़े से चल रहे स्वच्छता ही सेवा अभियान के सोमवार को समापन पर कहा कि सफाई देश के हर नागरिक का जन्मसिद्ध अधिकार होने के साथ उसका सफाई बनाए रखने का भी दायित्व है। पुरी ने बताया कि इस अभियान में शहरी क्षेत्रों में आयोजित 3.50 लाख विभिन्न गतिविधियों में 80 लाख से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शुरू किए गए स्वच्छ भारत अभियान को कामयाब बनाने के लिए लोगों से जीवन शैली में बदलाव करने की जरूरत पर बल दिया। इसी बीच, केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि जम्मू–कश्मीर जल्द ही खुले में शौच से मुक्त हो जाएगा। राज्यमंत्री ने रविवार की राज्य के डोडा जिले मे हमबाल–ए गांव को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया। खल्लोनी प्रखंड में स्थित इस गांव को मंत्री ने सांसद आदर्श ग्राम योजना के तहत गोद लिया है। सिंह ने महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए हमबाल–ए गांव के लोगों की तारीफ की और विभिन्न विभागों के लगातार चलाए जाने वाले अभियान व स्थानीय लोगों की उत्साह भरी प्रतिक्रिया व योगदान की सराहना की। उन्होंने उम्मीद जताई कि जम्मू–कश्मीर इस लक्ष्य को जल्द ही हासिल कर लेगा।

जब उड़ते विमान में ध्वस्त हो गया भारत का परमाणु स्वप्न

अमेरिका की खुफिया एजेंसी सीआईए दुनियाभर में अपने अभियान चलाती है और इस बात के लिए बदनाम है कि जो भी अमेरिका के हितों को प्रभावित करता या अमेरिका से आगे निकलता दिखता है, उसे यह एजेंसी हर तरह के हथकंडे अपनाकर रास्ते से हटा देते है। तो क्या भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक और महान वैज्ञानिक होमी जहांगीर भाभा के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ था ? किस्सा कुछ यूं है कि भाभा के कुशल नेतृत्व में भारत ने 60 के दशक में ही परमाणु बम बनाने की दिशा में कदम बढ़ा दिए थे। भाभा तब तेजी से भारतीय परमाणु कार्यक्रम को आगे बढ़ा रहे थे। वे दुनियाभर के परमाणु वैज्ञानिकों और देशों का ध्यान खीचनें लगे थे। उन्होंने अपने सहयोगी वैज्ञानिकों की एक जबरदस्त टीम बनाई थी और ऐसा लगने लगा था कि उनके नेतृत्व में भारत जल्द ही कामयाब हो जाएगाा। मगर सन्1966 में अचानक एक विमान दुर्घटना में उनकी असमय मृत्यु हो गई। वे एयर एंडिया के जिस बोइंग 707 विमान मे संवार थे, वह मुंबई से

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

पृष्ठ क्रं. 1 का शेष भाग

परिवार को बदनाम करने का पूरा पूरा प्रयास किया जबकि एक भी प्रकरण में स्वयंसेवकों की भूमिका सामने नहीं आयी। हिंसा की आड़ में दुष्प्रचार करने वालों को कटघरे में खड़ा करते हुये सरसंघ चालक जी ने कहा कि अहिंसक तरीके से गौरक्षा करने वाले कई कार्य कार्यकर्त्ताओं की इन दिनों हत्या की गयी है, उनके साथ सामूहिक रूप से मारपीट भी की गयी लेकिन इस सब से गौरक्षकों को परेशान नही होना चाहिये, अपना काम करते रहना चाहिये। गौरक्षक, गौरक्षा का प्रचार करने वालों में मुस्लिम भी हैं, दूसरे सम्प्रदायों के लोग भी हैं श्री भागवत ने आगे कहॉ कि भृष्टाचार पर नियंत्रण के लिये, अर्थिक प्रगति के लिये कई योजनायें शुरू की गयी हैं। ये साहसिक फैसले है। इन पर भी आकलन करने की जरूरत है। जो अर्थनीति सबका हित नही करती उस पर विचार हो हमें सब तबकों को साथ लेकर चलने वाली नीति चाहिये। आपने आगे यह भी कहा कि शासन के अच्छे संकल्प तो है लेकिन इनको लागू कराना और पार दर्शिता का ध्यान रखना भी जरूरी है। सर संघचालक श्री मोहन जी भागवत ने इस अवसर पर परम्परागत शस्त्रों का पूजन भी किया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी, केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही।

मुसलिम महिला ने भारतीय चालक की जान बचाई

संयुक्त अरब अमीरात में एक मुसलिम महिला ने एक भारतीय ट्रक चालक की जान बचा ली जो भयानक सड़क दुर्घटना के बाद आग कही लपटों में घिर गया था। 'गल्फ न्यूज' के मुताबिक 22 साल की जवाहर सैफ अल कुमैती अस्पताल में भर्ती अपने एक दोस्त से मिलकर घर लौट रही थी जब उसने रास अल – खैमा में दो ट्रकों में आग लगी हुई देखी । उन्होंनें एक व्यक्ति के चिल्लाने की आवाज सुनी जो अपनी जान बचाने की गुहार लगा रहा था । उसने बहादुरी दिखाते हुए अबाया लिबास (कुछ मुसलिम महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला लबादे जैसा लिबास) से आगो बाहर निकाल लिया । खबर के मुताबिक अल कुमैती ने कहा कि आग से घिरे इन दोनों को देख्कर वह भौचक्की रह गई थी । उसने आग में फंसे और दर्द से कराहते हुए एक व्यक्ति को मदद के लिएचिल्लाते हुए भी देखा । पुलिस ने घायल शख्स की पहचान हरकिरत सिंह के तौर पर की है । अल कुमैती ने गाड़ी में बैठी अपनी दोस्त से उसका अबाया लेकर आग बुझाई थी। दोनों चालक 40 से 50 फीसद तक झुलस चुके थे। दोनों को अस्पताल ले जाया गया। रास अल खैमा पुलिस के एंबुलेस और बचाव विभाग के मेजर तारिक मोहम्मद अल शरहान ने कहा कि वह इस महिला को उसकी बहादुरी के लिए सम्मानित करेंगे । खबर में कहा गया कि संयुक्त अरब अमीरात में भारत के राजदूत नवदीप सिंह सरी ने कहा है कि आबु धाबी में भारतीय दूतावास भी अल कुमैती को सम्मानित करेगा।

सुखमय बनाएँ वृद्धावस्था

वृद्धावस्था को अनुभव का खजाना कहा गया है। चीन में लोग वृद्धावस्था को बहुत शानदार मानते हैं और परमात्मा का उपहार मानते है। अपने देश में बुजुर्गो को बहुत सम्मान एवं आदर की दृष्टि से देखा जाता था, किन्तु आज परिस्थिति बदली हुई दिखती है। किसी समय वृद्धावस्था का उपयोग लोग अपने जीवन भर के अनुभवों को बाँटने में करते थे और अन्य लोग भी उन अनुभवों को हृदय से स्वीकार करना चाहते थे , परन्तु आज ऐसा दिखाई नही पड़ता है। मनुष्य की औसत आयु भी वैज्ञानिक प्रगतिशीलता के साथ बढी है। संसार में साठ वर्ष एवं उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की संख्या अधिक हैं। यही कारण है कि आज उम्रदराज व्यक्ति हर देश में, हर प्रान्त में देखने को मिल जाते हैं। अधिकतर वृद्ध एकाकी में जीवन जीने को बाध्य हैं। समय रहते यदि जीवन में आगे आने वाली समस्याओं की गंभीरता को गहराई से सोचा जाये और उसके अनुरूप योजना बनाकर चला जाये तो बहुत सा समाधान मिल सकता है। अवकाशप्राप्ति के बाद की अवस्था भी तब सुखमय व आनंदित रह सकती है। अनुसंधानकर्ता ने वृद्धावस्था को सुखमय व आनंदपूण किस तरह से बनाया जा सकता है, इस संबंध में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिये है। वे ये हैं– (1) शारीरिक स्वास्थ (2) आत्मिक आत्मनिर्भरता (3) मानसिक स्वास्थ्य। इनमें शारीरिक स्वास्थ्य सर्वप्रमुख है। 'जान है तो जहान है'– की उक्ति विश्वप्रसिद्ध है। विशेषज्ञों ने मध्यम वर्ग की आयु के अर्थात पचास वर्ष से अधिक आयु के हजारों व्यक्तियों का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला है कि दिन भर बैठकर काम करने वाले व्यक्तियों को हृदय रोग होने की तिगुनी संभावना रहती है, फिर चाहे अवस्था कुछ भी हो। जो लोग नियमित भ्रमण करते है, तैराकी करने जैसी गतिविधियों में संलिप्त रहते हैं, उनके इस तरह की बीमारियों के चंगुल में फँसने की संभावना कम रहती है। स्वास्थ्य वैज्ञानिकों के अनुसार, विश्राम एवं गहरी नींद का स्वस्थ रहने से गहरा संबंध है। परिश्रम करने से ही गहरी नींद आती है। आरामतलब या निठल्ले बैठे रहने वाले इस मुख से वंचित रह जाते है। चिकित्सकों का तो यहाँ तक का कहना है कि प्रायः एवं सायंकालीन भ्रमण करना, नींद की गोली खाने से भी अधिक प्रभावी होता है। वृद्धावस्था में अधिकतर समस्याये आर्थिक होती है। अतः पैसे को दुरूपयोग न करना, आड़े वक्त के लिये बचत करना, संयम बरतना, भोजन, वस्त्र, निवास, मनोरंजन आदि में विचारपूर्वक व्यय करना– जैसे महत्वपूर्ण सूत्रों का ध्यान रखा जाये, तो ब्रेन्जामिन फ्रैंकलिन के शब्दों में, उनकी ही तरह वृद्धावस्था में हर व्यक्ति के पास पैसों की पर्याप्त बचत होगी। उनके साथ ही आर्थिक बचत से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है– मानसिक एवं आत्मिक विकास।

पृष्ठ क्रं. 3 का शेष भाग

अमेरिकी शहर न्यूयार्क जा रहा था। बीच में मॉन्ट ब्लां के निकट विमान पहाड़ की चोटी से टकरा गया और होमी जहांगीर भाभा सहित सभी 177 लोग मारे गए। भाभा के निधन से भारत का परमाणु कार्यक्रम शिथिल पड़ गया और जो काम 60 के दशक में पूरा हो सकता था, अंततः वह पहले परमाणु परीक्षण के साथ 1974 में पूरा हुआ। यदि भाभा की असमय मृत्यु न होती तो संभव था कि भारत काफी पहले परमाणु परीक्षण कर विश्व–शक्ति बन जाता, क्योकि प्रतिभावान भाभा ने 1944 में ही नाभिकीय ऊर्जा पर काम करना शुरू कर दिया था उनकी मृत्यु के दशकों बाद अमेरिका के पत्रकार ग्रेगरी डगल्स और सीआईए के अफसर रॉबर्ट क्राओली के बीच हुई बातचीत में खुलासा हुआ कि अमेरिका भारत द्वारा 60 के दशक में परमाणु बम बनाना शुरू करने को अपने लिए समस्या मानता था।

सूचना

कृपया आप ~~अपना~~ ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com